राजेन्द्र राजन

बिहार चुनाव

बिहार विधानसभा चुनाव के करीब आते ही जोड़-तोड़ शुरू है । बिहार में वाम विचारधारा संसदीय राजनीति में भले ही संख्यात्मक आधार पर कम है , लेकिन जन प्रभाव की दृष्टि से आज भी सबल है ।

बिहार ही नहीं देश के स्तर पर एनडीए को पराजित करना लोकतंत्र की रक्षा के लिए , मानवता की हिफाजत के लिए और वसुधैव कुटुंबकम की भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए सबसे बड़ा और जरूरी कर्तव्य है। सांप्रदायिक शक्तियों ने सत्ता के संरक्षण में फासिस्ट चरित्र और पथ अपना लिया है । खतरनाक समय में रहने के लिए हम वाध्य हैं।

सच्चाई है , कोई भी एक दल अकेले के दम पर उसके बढ़ाव को रोकने की ताकत नहीं रख रहा है। इसके लिए वास्तविक ,व्यापक और नैतिक संयुक्त मोर्चे का निर्माण आवश्यक है । संयुक्त मोर्चे का निर्माण नीति आधारित हो न कि व्यक्ति हित में । व्यक्ति हितार्थ निर्मित मोर्चा में नैतिक शक्ति विलुप्त हो जाती है । बलशाली व्यक्ति और संगठन भी नैतिकता के अभाव में भले ही शक्तिमान दिखाई पड़े लेकिन बालू की भीत की तरह ढह जाता है ।

न्यूनतम साझा कार्यक्रम और एक समन्वय समिति का गठन मोर्चा बनाने के पूर्व आवश्यक शर्त होनी चाहिए , न कि नेतृत्व की । नेतृत्व का सवाल प्रधान तब बन जाता है जब निरंकुश प्रवृत्ति हावी हो जाती है । निरंकुश शक्ति के आधार पर फासिज्म से लड़ना कठिन ही नहीं असंभव है। अंतोगत्वा दोनो एक ही सिक्के के दो पहलू है। यही कारण है ,खूंखार सांप्रदायिकता से क्षद्म धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई पराजित होती रही है।

एनडीए विरोधी मोर्चा केलिए सांप्रदायिक फासीवाद को पराजित करना मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। सर्वाधिक रूप से इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जरूरी है , एक ऐसा मोर्चा बने जो जनता के निगाह में नैतिक और स्वीकारणीय हो । झूठे सपने दिखा कर सत्ता प्राप्ति पश्चात राज्य और अवाम के हित की घोर उपेक्षा इस राज्य में भी हुई और हो भी रही है। विचारधारा विरुद्ध चलने का राज्याभिषेक पश्चात के उदाहरण राज्य में विगत वर्षों के है। इस समृद्ध अनुभव से सीखने की जरूरत है । रीढ झुकाकर भीख मागी जाती है , मोर्चा सजाने केलिए रीढ सीधी और मजबूत करने की जरूरत होती है।।

बिहार लोकतांत्रिक परंपरा की धरती है। समय था बिहार में समाजवादी और साम्यवादी राजनीति का व्यापक प्रभाव था । जब यहां धर्म नस्ल ,जातीयता ,जातिवाद , अहंगतावाद और वंशवाद का वर्चस्व हुआ, सरस्वती नदी की तरह ये गुम हो गए । जरूरत है सरस्वती नदी प्रवाहित रहे। यहां तो जीवनदायिनी गंगा पर भी खतरा है।

बिहार में सब कुछ के बाद एनडीए को पराजित करना संभव है , अगर उसके विरुद्ध स्वीकार्य मोर्चा और नेतृत्व नैतिक स्वरुप में सामने आए। ऐसे मोर्चा के बनते ही यहां हाल ही में एनडीए धराशाई हुई थी। वंश और अहं के अनैतिक दबाव में एनडीए विरोधी निर्मित सरकार ,जिसका समर्थन सीपीआई ने भी किया था , अकालमृत्यु का शिकार बन गई।

वास्तविकता है , बिहार जातीय समीकरण की राजनीति के दौर में है । इसीलिए बिहार में इसके लिए जरूरी है वैसे दल को जातीय समीकरण को देखते हुए भी स्वच्छ और नैतिक छवि के व्यक्ति को आगे करना चाहिए । जिसकी पहचान जातीय भले ही हो लेकिन सर्व स्वीकार्य हो। ऐसा नहीं होगा तो जैसे इब्राहिम लोदी की विशाल भारतीय सेना मुट्ठी भर बावरी सेना से पराजित हुई थी , वही दुहराया जाएगा। । इतिहास से सबक लेने की जरूरत है ।

" तुम हो कौन और मैं क्या हूं ?
इसमें क्या है धरा , सुनो
मानस जलधि रहे चिर चुंबित
मेरे क्षितिज उदार बना।"

कविश्रेष्ठ जयशंकर प्रसाद के इस आह्वान से प्रेरित होकर सोचने का आज वक्त आया हुआ है।

नितांत निजी राय ।

(हालात और युवा शक्ति के प्रस्तुत निम्न चित्र में प्रर्दशित आह्वान से प्रभावित होकर ।)

राजेंद्र राजन